दिनांक 23 सितम्बर 2017 को फेडरेषन ऑफ ऑब्स्ट्रेटिक एंड गायनिकोलॉजिकल सोसायटी ऑफ इंडिया (फॉग्सी) एवं इन्दौर ऑब्स्ट्रेटिक एंड गायनिकोलॉजिकल स्पेशियालिस्ट एसोसिएशन के तत्वावधान में ''Critical Care in Obstetrics'' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन 2017 के अवसर पर ब्रिलियंट कन्वेंशन सेंटर, इन्दौर में माननीय लोक सभा अध्यक्ष का भाषण।

1. देश में महिलाओं की शिक्षा एवं स्वास्थ्य के क्षेत्र में जागरूकता लाने एवं उनकी जिंदगी में बदलाव लाने के उद्देश्य से एवं देश में महिलाओं के स्वास्थ्य को प्राथमिकता देने के उद्देश्य से इन्दौर में **'Critical Care in Obstetrics'' विषय पर आयोजित द्विदिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन 2017** में सम्मिलित होकर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में यह कार्यक्रम अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं प्रासंगिक है। इसके लिए मैं उन सभी डॉक्टरों एवं स्वास्थ्य कार्यकताओं को धन्यवाद देती हूं जिन्होंने इस प्रकार की सकारात्मक संकल्पना को समाज के समक्ष प्रस्तुत किया है एवं महिलाओं को हेल्थ केयर से जोड़ने, उनके स्वास्थ्य के बारे में संपूर्ण जानकारी एवं तदनुरूप उपचार की दिशा में सकारात्मक पहल की है। कहा जाता है कि "Prevention is better than cure". यह वक्तव्य बिल्कुल सत्य है। परंतु आधुनिक चिकित्सा विज्ञान में हो रही प्रगति को दृष्टिगत रखते हुए यह हमारा कर्त्तव्य है कि सभी चिकित्सक ज्यादा–से–ज्यादा महिलाओं तक यह संदेश पहुंचाएं कि वे समय–समय पर अपने स्वास्थ्य की जांच कराएं। यह न केवल उनके स्वास्थ्य बल्कि राष्ट्र के बेहतर भविष्य के लिए आवश्यक है।

2. मैंने देखा है कि महिलाएं अपने स्वास्थ्य की अनदेखी करते हुए अपने परिवार के अन्य सदस्यों की देखभाल करना अपना फर्ज समझती हैं। जबकि सच्चाई यह है कि हम सबको अपने परिवार के महिला सदस्यों की देखभाल पर ध्यान देना चाहिए क्योंकि वे देश के भविष्य की निर्माता हैं। एक स्वस्थ माता ही स्वस्थ संतान को जन्म दे सकती हैं। समाज में यह जागरूकता फैलाना न केवल चिकित्सकों बल्कि समस्त नागरिकों का कर्त्तव्य होना चाहिए।

3. जैसा कि हम सभी जानते हैं कि The first wealth is health और यह भी उतना ही सच है कि Good health is not something we can buy. However, it can be extremely valuable Savings Accounts. इसलिए अच्छे स्वास्थ्य के महत्व को हम सभी जानते हैं और इसकी आवश्यकता एवं जन–जन पर, विशेषकर गरीब तबके के ऊपर पड़ने वाले प्रभावों से हम सभी अच्छी तरह से परिचित हैं।

4. समाज में नारी कई रूपों में हमारे समक्ष नज़र आती हैं। समाज के ताने–बाने में बंधी स्वभावतः वह सदैव दूसरों के कल्याण की ही फिक्र करती है। अपना स्वयं का ध्यान न रख पाने के कारण असमय ही वे अनेक बीमारियों से ग्रस्त हो जाती हैं। अतः, उन्हें सर्वप्रथम यह समझाना एवं बताना आवश्यक है कि **''शरीरम् अद्यं खलु धर्मसाधनम्''** अर्थात् शरीर ही धर्म का साधन है। अगर वे स्वयं स्वस्थ नहीं रहेंगी तो परिवार का देखभाल कैसे करेंगी।

5. महिलाएं देश के विकास का एक महत्वपूर्ण आधार हैं। समाज का समावेशी विकास तभी संभव है जब हम उन्हें भी समुचित पोषण, शिक्षा, सामाजिक सम्मान के साथ–साथ उनकी योग्यतानुसार रोजगार प्रदान करते हुए उनके चर्तुमुखी विकास के लिए निरंतर प्रयत्न करें। यह सुखद है कि निरंतर इस दिशा में हो रहे प्रयासों के फलस्वरूप हम शनैः शनैः लैंगिक समानता की ओर बढ़ रहे हैं। यह आंकड़ों के माध्यम

से स्पष्ट दिखता है। जहां वर्ष 2001 में भारत में 1000 लड़कों की तुलना में लड़कियों की संख्या 933 थी, वहीं वर्ष 2011 में यह बढ़कर 943 हो गई है। ये आंकड़े स्वयं इस बात को सिद्ध करते हैं कि महिला–पुरुष समानता की दिशा में हम आगे की ओर बढ़े हैं।

6. सरकार द्वारा किए गए प्रयासों के फलस्वरूप हम गर्भवती महिलाओं की मृत्यु दर और शिशुओं की मृत्यु दर में सुधार लाने में सफल हुए हैं। महिलाओं में स्वास्थ्य के प्रति जितनी अधिक जागरूकता होगी उतना ही अधिक हम बहुमूल्य प्राणों की रक्षा कर सकने में सक्षम हो सकेंगे। राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति 2017 को सतत् विकास लक्ष्य में विनिर्धारित स्वास्थ्य संबंधी लक्ष्यों के ध्यान में रखते हुए ही तैयार किया गया है। एक आंकड़े के मुताबिक यह लक्ष्य रखा गया है कि वर्ष 2020 तक maternal mortality को प्रति लाख 167 से प्रति लाख 100 से कम पर लाया जाए। इसी प्रकार शिशु मृत्यु दर को प्रति हजार 49 से घटाकर वर्ष 2025 तक 28 करने की दिशा में कार्य किया जा रहा है। सरकार ने महिलाओं के स्वास्थ्य का भी विशेष ध्यान रखते हुए मातृत्व विधेयक को पारित कराया है जिसके तहत गर्भवती महिलाओं को और अधिक मातृत्व अवकाश एवं वित्तीय सहायता प्रदान की जा रही है।

7. ऐसा देखा गया है कि किशोरावस्था से युवावस्था में प्रवेश करने वाली कन्याओं में सर्वाधिक संख्या एनीमिया से पीड़ित हो जाने की रहती है क्योंकि वे खान–पान में लौह तत्व की कमी के बारे में नहीं जान पाती हैं। खान–पान का सही ख्याल नहीं रखने के कारण महिलाओं के शरीर में अक्सर खून की कमी हो जाती है एवं उन्हें विवाह पश्चात् गर्भावस्था के दौरान स्वास्थ्य संबंधी अनेक परेशानियों का सामना करना पड़ता है। यदि उन्हें समय रहते विशेष मार्गदर्शन मिल जाए तो अनीमिया पर काफी हद तक नियंत्रण पाया जा सकता है और इन सब परेशानियों पर नियंत्रण पाया जा सकता है। डॉक्टरों,

स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं एवं माताओं सहित हम सभी का यह कर्त्तव्य है कि उन्हें बतलाएं कि युवा अवस्था में किस प्रकार के भोजन को ग्रहण करना चाहिए।

8. ऐसा देखा गया है कि वर्तमान परिवेश में जंक फूड के सेवन से भी स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है। कम उम्र में ही मोटापा की समस्या, थॉयराइड असंतुलन इत्यादि कुछ ऐसे मुद्दे हैं जिनसे उनमें स्वास्थ्य संबंधी दिक्कतें होने लगी हैं। अतः, सही समय पर यदि सही सलाह उपलब्ध कराई जाए तो बहुत संभव है कि इन समस्याओं में कमी आ सकती है।

9. नई सहस्राब्दी में महिला की भूमिका का विस्तार हुआ है। एक सबल, सशक्त एवं सक्षम व्यक्ति के रूप में नारी आज समस्त समस्याओं को सुलझाने एवं राष्ट्र–निर्माण में निर्णायक भूमिका अदा करने की क्षमता रखती है। इस संदर्भ में प्रख्यात समाज सुधारक, युगनायक, सन्त एवं भविष्यद्रष्टा स्वामी विवेकानन्द ने वर्षों पहले कहा था कि **''किसी भी राष्ट्र की प्रगति का सर्वोत्तम थर्मामीटर है वहां की महिलाओं की स्थिति।''**

10. आज की नारी एक नई भूमिका में हम सबके समक्ष है। उनमें जन्मजात आभा, सृजनशीलता एवं सोच में नयापन है। चाहे अंतरिक्ष की उड़ान हो या अंटार्कटिका ज्वालामुखी की खोज, रिवर रॉफ्टिंग हो या पर्वतारोहण, मैनेजमेंट हो या सेना, साहसपूर्ण क्षेत्रों में भी महिलाओं की भागीदारी बढ़ रही है।

11. अधिकांश समाजशास्त्री यह मानते हैं कि जब भी समाज, राष्ट्र एवं विश्व विकास के शिखर पर स्थापित हुआ, उसके पीछे नारियों के त्याग, बलिदान, सर्मपण एवं योगदान ही महत्वपूर्ण रहे हैं।

12. विकास की प्रक्रिया में मीडिया का बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान रहा है। जहां मीडिया आज महिला के अधिकार एवं लैंगिक समानता की बात करता है, वहीं मैं चाहती हूं कि वह महिला स्वास्थ्य के विषय में भी समाज में जागरूकता फैलायें।

13. माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में महिलाओं के हितों से संबंधित कई कदम उठाए गए हैं। गरीबी रेखा के नीचे के परिवारों के महिलाओं के स्वास्थ्य की सुरक्षा के उद्देश्य से उज्ज्वला योजना प्रारंभ की गई है। ''बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ'' न केवल लिंग समानता की दिशा में परिवर्तनकारी पहल है बल्कि इसने जनता और सरकार के बीच विश्वास को मजबूत भी किया है। ''स्टैंड अप इंडिया'' के तहत, महिला उद्यमियों को 10 लाख से 1 करोड़ रुपये तक के ऋण को मंजूरी दी गई है। ''सुकन्या समृद्धि योजना'' एवं ''नई रोशनी योजना'' भी महिलाओं की बेहतरी से संबंधित योजनाएं हैं। महिला ई–हाट एक अनोखा ऑनलाइन मंच है जहां महिलाओं को अपने उत्पादों को प्रदर्शित करने का मौका मिल रहा है। महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए उनका सामाजिक, आर्थिक एवं स्वास्थ्य संबंधी तीनों मुद्दों पर उनका सर्वांगीण हित सुनिश्चित करना ही सरकार का उद्देश्य है।

14. आज देश में परिवर्तन और प्रगति की एक लहर चल पड़ी है और महिलाएं भी इस बदलाव का अभिन्न अंग हैं। सशक्त नारी से ही सशक्त भारत का निर्माण संभव है। अतः, सशक्त नारी के लिए उनका स्वस्थ एवं रोगमुक्त होना भी आवश्यक है।

15. स्वास्थ्य संबंधी सरोकारों को दृष्टिगत रखते हुए हम Sustainable Development Goals को प्राप्त करने के लिए वचनबद्ध हैं जिसमें वर्ष 2030 तक सबके लिए परिवार नियोजन की सुविधा सुनिश्चित करने के स्पष्ट लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं। सतत् विकास लक्ष्यों में इस बात पर भी जोर दिया गया है कि सफल सतत् विकास के लिए सरकारों, निजी क्षेत्र और सिविल समाज के बीच भागीदारी आवश्यक है। हमारी वचनबद्धता कितनी ही बड़ी क्यों न हो और हमारा इरादा कितना भी पक्का क्यों न हो लेकिन अकेले कार्यवाही करके ही हम इन लक्ष्यों को प्राप्त नहीं कर सकते। सार्थक परिवर्तन लाने और प्रगति बढ़ाने के लिए भागीदारी आवश्यक है।

16. भारत का हेल्थ सेक्टर दुनिया के सबसे बड़े हेल्थ केयर सिस्टम्स में से एक है। हमारे हेल्थकेयर सिस्टम में बहुत–सी खूबियां और खामियां भी हैं। भारत में health sector के दो हिस्से हैं। एक पब्लिक सेक्टर और दूसरा प्राइवेट सेक्टर। बढ़ती हुई जनसंख्या के साथ स्वास्थ्य की जरूरतों की पूर्ति के लिए प्राइवेट हेल्थ सेक्टर में बहुत तेजी से बढ़ोत्तरी हुई है। एक अनुमान के अनुसार शहरी क्षेत्रों में लगभग 70 प्रतिशत और ग्रामीण क्षेत्रों में लगभग 63 प्रतिशत लोग अपनी स्वास्थ्य संबंधी जरूरतों के लिए प्राइवेट सेक्टर पर निर्भर हैं और हम सभी जानते हैं कि सरकारी क्षेत्र के अस्पतालों पर अपनी क्षमता की तुलना में स्वास्थ्य सुविधाएं प्रदान करने का दबाव है और उन्हें किस प्रकार की समस्याओं से जूझना पड़ता है।

17. प्राइवेट और पब्लिक सेक्टर के अलावा भारत के चिकित्सा क्षेत्र में एक और divide है जिन्हें हम urban और rural divide के रूप में कह सकते हैं। हमारी अधिकतर चिकित्सा सुविधाएं शहरी क्षेत्रों में ही उपलब्ध हैं। हमारे गांवों में जहां कि 68 प्रतिशत population निवास करती है वहां केवल 2 प्रतिशत डॉक्टर हैं। इसका कारण गांवों में बुनियादी सुविधाओं के अभाव में डॉक्टर काम नहीं करना चाहते हैं और इसलिए भी शहरी क्षेत्रों में प्राइवेट और पब्लिक सेक्टर दोनों, अस्पतालों पर काफी दबाब पड़ता है।

18. आज इस अवसर पर उपस्थित सभी डॉक्टरों, प्रशासनिक अधिकारियों जनप्रतिनिधियों एवं सामाजिक कायकर्ताओं से आग्रह है कि वे अपने गांव, कस्बे, जिले, प्रान्त एवं राज्य में घर–घर में महिलाओं के स्वास्थ्य का ध्यान रखें। उनके लिए बनाई गई विभिन्न योजनाओं का प्रचार–प्रसार करें ताकि उनके स्वास्थ्य की उत्तम रक्षा हो सके।

17. इस अवसर पर एक हैंड बुक "Critical Care in Obstetrics" का विमोचन हो रहा है। मैं समझती हूं कि यह हैंड बुक महिलाओं एवं उनके स्वास्थ्य के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होगी एवं लोगों को जागरूक करेगी।

18. फेडरेशन ऑफ ऑबस्टेट्रिक एंड गाइनोलॉजिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया (Federation of Obstetric and Gyanecology Society of India) द्वारा महिला स्वास्थ्य रक्षण की दिशा में बेहतर प्रयास किए जा रहे हैं एवं उनकी सरकार एवं अन्य भागीदारों के साथ मिलकर काम करने की नई पहलें और अग्रगामी प्रयास सराहनीय हैं और इससे सकारात्मक परिवर्तन आने की संभावना है। इस प्रकार, हम महिलाओं के कल्याण और उनके स्वास्थ्य में सुधार लाने के लिए उन्हें और उनके परिवारों को जानकारी, संसाधन और सेवाएं उपलब्ध करा सकेंगे।

19. मैं इंदौर ऑब्सटेट्रिक्स एंड गॉइनोकॉलोजिकल स्पेशलिस्ट एसोसिएशन (Indore Obstetrics and Gyanaecological Specialist Association) को धन्यवाद देती हूं कि उन्होंने यह कार्यक्रम का आयोजन किया है एवं महिलाओं को शिक्षित करने और उन्हें सही स्वास्थ्य देखभाल की जानकारी देने की दिशा में एक अच्छा प्रयास किया है। मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि यह संस्था महिलाओं के लिए स्वास्थ्य के लिए निरंतर प्रयास करती रहेंगी और सर्वोत्तम गॉइनोकॉलोजिस्ट की मदद से विशेष रूप से देश के ग्रामीण और दूर–दराज के क्षेत्रों में रहने वाली गरीब महिलाओं के जीवन को बेहतर बनाती रहेगी।

धन्यवाद।